405/19/12/16

Name of Candidate- Seema Kumari
Name of Supervisor -Prof. Durga Prasad Gupt
Department of Hindi
Faculty Humanities & Language
Title - Samkaleen Kahaniyon Main Chitrit Aam Aadmi Ka Adhyayan

शोध-सार

समकालीन कहानी के संदर्भ में आम आदमी से अभिप्राय है साधनहीन लोग, जो अभाव में जीवन व्यतीत करते हैं और जिनके पास अपनी बेहतरी के लिए कोई ठोस विकल्प नहीं होता है। यद्यपि भारत में खाते-पीते लोग साधनहीन नहीं होने के बावजूद आम आदमी के ही दायरे में आते हैं, क्योंकि नागरिक अधिकारों के अलावा इनके पास कोई खास अधिकार नहीं होते और न ही ये सत्ता के करीब होते है। हमारा समाज जातीय आधार पर बंटा हुआ है और यही आधार उसके कार्य के मापदण्ड तय करता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसे लोग कभी मजबूत नहीं हो सके। गरीब और ज्यादा गरीब होता गया तथा अमीर और ज्यादा अमीर होता गया। इस कारण आर्थिक रूप से कमज़ोर शोषित और वंचित लोग आम आदमी का जीवन जीने के लिए बाध्य हुए। उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका होने के बावजूद इनकी हमेशा उपेक्षा की गई। जबकि देश के आर्थिक विकास में इन शोषित, वंचित और पिछड़े लोगों का बहुत योगदान रहा है।

आम आदमी के दायरे में प्राय: निम्न वर्ग के लोग आते हैं। निम्नवर्ग के लोग आर्थिक रूप से अत्यन्त कमज़ोर होते हैं तथा उनके पास आय का कोई ठोस साधन नहीं होता है। इस कारण वे एक अनुशासित जीवन नहीं जी पाते हैं। उनका सामान्य जीवन भी अनेक विडम्बनाओं से भरा होता है। उन्हें छोटी से छोटी चीज़ों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। कारखाने में काम करने वाले मजदूरों को उचित पारिश्रमिक नहीं मिलता है। दिन-रात मेहनत करने के बावजूद उनका जीवन अभाव में ही गुजरता है। मजदूर तबके के लोगों को जीवन के हर क्षेत्र में सघर्ष करना पड़ता है। उन्हें किसी प्रकार की सुविधा प्राप्त नहीं हो पाती है। खुद अशिक्षित रहने के कारण वे अपने बच्चों को उचित शिक्षा नहीं दिला पाते हैं। परिणामत: पूरी पीढ़ी का जीवन सघर्ष में ही गुजरता है। अशिक्षा के कारण परिवार के

सदस्यों की संख्या बढ़ती जाती है और समूचे परिवार के पालन-पोषण की जिम्मेदारी एक आदमी को उठानी पड़ती है। इसी वजह से वह ज़रूरी सुविधाओं से भी वंचित हो जाता है। वह सदैव असुरक्षा बोध से ग्रसित रहता है।

समकालीन कहानी में चित्रित आम आदमी का अध्ययन सर्जनात्मकता का एक ऐसा पक्ष है जो वास्तविकता के साथ उजागर होता है। समकालीन कहानीकारों ने आम आदमी के दु:ख, तकलीफ, शोषण, उत्पीड़न जैसी समस्याओं को उजागर तो किया ही है साथ में उसके अंतर्विरोध को भी दर्शाया है। समकालीन कहानीकारों ने व्यवस्था के मूल चरित्र को चित्रित किया है। जिसमें काशीनाथ सिंह, संजीव, अखिलेश, सृंजय, शिवमूर्ति, उदय प्रकाश, स्वंय प्रकाश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, असग़र वजाहत, अरूण प्रकाश, रमेश उपाध्याय आदि मुख्य हैं। इन कहानीकारों ने आम आदमी के प्रति सहानुभूति प्रकट कर उसे संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है। समकालीन कहानी का नायक आम आदमी है तथा इसी के इर्द-गिर्द समस्त कथा बुनी गई है। इन कहानियों में आम आदमी का सच मुखरित होता है। आज के जीवन की जटिलता उजागर होती है। समकालीन कहानीकारों ने पूरी ईमानदारी के साथ 'आम आदमी के प्रति पक्षधरता' को प्रस्तुत किया है।

आज का आम आदमी एक नई दुनिया में प्रवेश कर चुका है तथा चकाचौंध कर देने वाले परिवेश के प्रति आकर्षित भी हुआ है यह आकर्षण पूंजीवादी बाज़ार का आकर्षण है। जो आम आदमी को भी भ्रमित कर उसका शोषण करता है। आज मूल्यों मान्यताओं, नैतिकताओं के प्रतिमान बदल चुके हैं इसलिए वह पूंजीवादी व्यवस्था के जाल में फंसा छटपटा रहा है। ये सभी बिन्दु समकालीन कहानीकारों के चिंता के केन्द्र में हैं जिसे ध्यान में रखकर मैंने अपने शोध को आम आदमी की ज़िंदगी और समस्या पर केन्द्रित किया है ताकि समकालीन कहानी में चित्रित आमआदमी के संघर्षात्मक स्वरूप को रेखांकित किया जा सके।